प्रार्थना की शक्ति

वेंकप्पा अण्णा की उलरू यात्रा

शाम्भवी क्रिश्चन द्वारा लिखित

वेंकप्पा अण्णा श्रीयान [सन् १९२९-२००१] एक समर्पित सिद्धयोग साधक थे जिन्हें जानने व जिनके साथ सेवा अर्पित करने का अवसर हममें से कई लोगों को मिला। दक्षिण भारत में जन्मे वेंकप्पा अण्णा काम करने के लिए अपनी युवावस्था में ही मुम्बई आ गए। उस दौरान वे गणेशपुरी गए और उन्हें भगवान नित्यानन्द के दर्शन हुए। कई वर्षों तक वे नियमित रूप से बड़े बाबा के पास जाते रहे। फिर सन् १९५० में उन्हें बड़े बाबा से यह आदेश मिला कि वे बाबा मुक्तानन्द की सेवा करें। अपना बाकी का जीवन, अण्णा [कन्नण भाषा में यह एक प्रेमपूर्ण सम्बोधन है जिसका अर्थ है "बड़ा भाई"] ने अनन्य भक्तिभाव से पहले बाबा जी की और फिर गुरुमाई जी की सेवा की। एक बार अपना जीवन श्रीगुरु को अर्पित कर देने के बाद, अण्णा ने कभी गुरुदेव सिद्धपीठ से बाहर जाने का विचार नहीं किया।

सन् १९८९ में गुरुमाई जी अण्णा को एक विशेष उपहार देना चाहती थीं, और वह उपहार था कि अण्णा उन स्थानों की यात्रा करें जहाँ उनके परमप्रिय श्रीगुरु, बाबा मुक्तानन्द गए थे और जहाँ पर सिद्धयोगी अण्णा का स्वागत कर सकें व उन्हें आस-पास के स्थान दिखा सकें। जब उनकी यात्रा आरम्भ हुई, तो यह स्पष्ट हो गया कि सभी लोगों को उनके सान्निध्य में रहना और उनसे बाबा जी व गुरुमाई जी के वे प्रसंग सुनना बहुत अच्छा लग रहा था जिन्हें वे साथ आए लोगों को सुनाया करते थे। अधिक से अधिक लोग अण्णा से यह अनुरोध करने लगे कि वे *उनके* समुदाय से मिलें, *उनके* देश की यात्रा करें।

जब गुरुमाई जी को इस बारे में बताया गया तो गुरुमाई जी ने कहा, "इसमें सोचने वाली कोई बात ही नहीं है! बिलकुल — यदि अण्णा जाना चाहें तो उनकी यात्रा के लिए सभी तैयारियाँ की जाएँ।" और जब यह बात अण्णा को बताई गई तो वे बोले, "मैं वही करूँगा जो गुरुमाई जी चाहती हैं। मैं किसी भी रूप में सेवा अर्पित करना चाहता हूँ।"

वेंकप्पा अण्णा ने बाबा मुक्तानन्द से खाना बनाना सीखा था और तभी से वे खुद भी पाककला में बड़े निपुण हो गए। उनका बनाया स्वदिष्ट, सुगन्धित व पौष्टिक भोजन आश्रम में लोक-प्रिय था।

गुरुकुल विद्यार्थियों को और आने वाले दर्शनार्थियों को भी अण्णा द्वारा बनाया गया भोजन बहुत पसन्द आता। और अण्णा को सबसे अधिक प्रसन्नता तब होती जब उन्हें गुरुमाई जी के लिए भोजन बनाने का अवसर मिलता।

गुरुसेवा के बारे में अण्णा की गहरी समझ और स्वदिष्ट व्यञ्जन बनाने के उनके कौशल के इस मेल से गुरुमाई जी को लगा कि अण्णा विश्वयात्रा करते हुए सिद्धयोगियों को इन दोनों चीज़ों के बारे में बता सकते हैं। इसलिए गुरुमाई जी ने कहा कि वेंकप्पा अण्णा सत्संग आयोजित करना और पाक-कला की कक्षा लेना आरम्भ करें।

इसलिए अगले कई वर्षों के लिए यानी सन् १९९४ तक, अण्णा विश्वभर के सिद्धयोग संघम से मिलते रहे और उन्होंने अनगिनत श्रद्धालुओं को प्रेरित किया — सेवा अर्पित करने से जुड़ी अपनी असाधारण कहानियाँ सुनाकर, अपने खाने की खुशबू से, बाबा जी और गुरुमाई जी के प्रति अपने भक्तिभाव से और सिद्धयोग पथ के अपने ज्ञान द्वारा।

सन् १९९१ के मई माह में जब अण्णा ऑस्ट्रेलिया में थे, तब गुरुमाई जी के कहने पर वे उलरू गए — ऑस्ट्रेलियाई रेगिस्तान के बीचों-बीच स्थित एक विशालकाय, शानदार लाल पत्थर जो वहाँ के मूल निवासियों के लिए पूजनीय है।

अण्णा की यात्रा के समय, वहाँ साल भर से वर्षा नहीं हुई थी और भूमि बिलकुल सूखी पड़ी थी। जब अण्णा उलरू के नज़दीकी हवाईअड्डे पर पहुँचे तो वहाँ के मूल निवासियों का एक समूह उनका स्वागत करने वहाँ आया और उनमें से एक वरिष्ठ सदस्य ने उन्हें स्नेहपूर्वक गले से लगा लिया। अण्णा ने इसे याद करते हुए बाद में बताया, "उस क्षण ने मुझे गहराई से छू लिया; मुझे लगा कि वह गुरुमाई जी का प्रेम था।"

उस दिन सूर्यास्त के समय वे पहली बार उलरू गए। उस भव्य पत्थर में बनी एक गुफा की ओर अण्णा को आकर्षण महसूस हुआ; उन्हें ऐसा लगा जैसे उस गुफा में दिव्य ऊर्जा हो। वे सम्मान अर्पित करने उस गुफा की ओर गए। वहाँ उन्हें दृष्टान्त हुआ कि अस्त होते सूर्य के प्रकाश में गुफा के द्वार पर बाबा जी और गुरुमाई जी खड़े हैं। अण्णा ने पूरी श्रद्धा के साथ बाबा जी व गुरुमाई जी से प्रार्थना की कि उनकी कृपा से इस धरती पर वर्षा हो जिसकी उसे अत्यधिक आवश्यकता थी।

उस दिन जब वे अपने निवास-स्थान पर लौटे और सोने ही जा रहे थे, तो उन्हें बूदों की आवाज़ सुनाई देने लगी। वे समझ गए कि यह बारिश है! अगली सुबह बारिश रुक गई। अण्णा एक बार फिर उलरू गए, इस बार पूजा व प्रदक्षिणा करने।

जैसे ही वे उस पावन पत्थर के निकट पहुँचे, बारिश तेज़ हो गई और फिर जब उन्होंने पूजा आरम्भ की तो बारिश बिलकुल रुक गई। अण्णा ने आरती की, अगरबत्ती जलाई और वहाँ फूल चढ़ाए। पूजा होने के बाद उन्होंने प्रदक्षिणा करनी शुरू की; बारिश फिर तेज़ हो गई। ऐसा लग रहा था कि हर क़दम के साथ बारिश तेज़ होती जा रही है और कुछ ही समय में मूसलाधार वर्षा होने लगी।

अण्णा ने बाद में बारिश के बारे में बताया। वे कहने लगे, "पत्थर के किनारों से बहुत सारे झरने बह रहे थे, जो नीचे जाकर उस पत्थर के तल पर एक तालाब जैसा बना रहे थे। सब कुछ पानी से ढक गया था!" फिर भी, वे प्रदक्षिणा पूरी करने के अपने संकल्प पर डटे रहे। भीगते हुए, वे चार घण्टों तक उलरू के चारों ओर पदयात्रा करते रहे और बाबा जी व गुरुमाई जी को वर्षारूपी आशीर्वाद के लिए धन्यवाद देते रहे।

वहाँ के मूल निवासी एक बार फिर वेंकप्पा अण्णा से मिले; उनके चेहरे खुशी और उत्साह से खिल उठे थे। उन्होंने कहा, "आपके यहाँ आने से पहले यह भूमि एक साल से सूखी पड़ी थी! आपने बारिश कैसे कराई? आप कौन हैं? क्या आप कोई सन्त हैं?" अण्णा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "नहीं, मैं एक सन्त का शिष्य हूँ, एक महान गुरु का, गुरुमाई चिद्विलासानन्द का शिष्य हूँ। उनकी उपस्थिति सर्वत्र है।"

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।